

वृकर्मित (धनायुधानि ययानथन माधवन कीर्तन वयय कीर्त ॥
 धने लिखाल कृपात दानन चोद वलि वीय ॥ यजमान स्यात्तु मूकनाम
 नृत्पुत्र मृदुमिस्कायन हत वल्य च न वाक्य ॥ नाम
 जूद्ययाग यूजन ॥ आत्मयुज ॥ ॐ हूं कौं कौं कौं कौं ॥ कृपायालाय वलि
 गृहं श्वाहा ॥ ॐ हूं वां वदु काय वलि गृहं श्वाहा ॥ ॐ हूं गौं गौं गौं गौं व
 लि गृहं श्वाहा ॥ ॐ हूं सर्व विधि कृत्या ॥ सर्व हत स्या वलि गृहं श्वाहा

[illegible]

गृह्णं रं गानिकं नृस्वाहा॥ नृं ऊं ऊं ३ महा नाद ह ग ग्वय य न म ह न र्य ४
 ०० दं गं ध धूया दीया दी वलि गृह्णं रं गानिकं नृस्वाहा॥ नृं ऊं ऊं ३ महा नाद
 य (ग ग्वय य न म ह न र्य ४ ०० दं गं ध धूया दीया दी वलि गृह्णं रं गानिकं
 नृस्वाहा॥ नृं ऊं ऊं ३ कलं के ग्वय य न ह न र्य ४ ०० दं गं ध धूया दीया दी
 वलि गृह्णं रं गानिकं नृस्वाहा॥ नृं ऊं ऊं ३ विजय ग्वय य न म ह न
 र्य ४ ०० दं गं ध धूया दीया दी वलि गृह्णं रं गानिकं नृस्वाहा॥ नृं

पाण्डूपा आत्मपाण्डूपा ॥ पूर्ववत् मनुष्यकृत् वदक गते नृस्यध्व
वलि वीर्य ॥ ॐ हूं रुद्रकायवलि रुद्र २ स्वाहा ॥ पूर्ववत् ॥ शिपूना नक
अग्निवंगाल अग्निजिह्वा कालाक्ष कपालीन एकपाद लीमनूय
हाटक ॥ अवलहे वव ॥ समयवलि अऊवा वतीनि चवसधि जाय
आरु ॥ धर्मधनदावकायसाय ॥ कायद्याल वधुदासग ॥ मूनि लीयन
डाहायन ॥ ॐ हूं पद्मसनाय नमः ॥ दारु लक्ष्मकृत् ॥ कायसाय ॥ ॐ

हूं रुद्रकहे ववायनमः ॥ ध्यादिनपूर्वादि ॐ हूं वानक आग्नयादि
व्रीहिनार्क स्वस्वमंडलयाय ॥ शिजल यगान डाहायागास नय
गास आग्नयादिली डाहाकाकाग ॥ धर्मिमा चवक अयव का विष्णु
दु गीन कृत् मूर्धिला कपाल लंडि नाग सी अनक काटि दव ॥ य
लिचय ॥ पशुगर्भ ॥ वाकन अय ॥ समपाक अक्षुस ॥ वलि विसर्ज
न ॥ नवलिवलि दिगसग ॥ मूलवलि मधुलदातग ॥ धर्म आखात्र (ग)

यथाविधि ॥ ॥ अथ ८० या विधान न कसनाट श्वन पूजन ॥ या
घनमा वि (गघन ॥ मिहानाम दधश का न स का न कू गन ॥ पूरुघनाम
दु (थश का न ह का न कू रुन ॥ धत वि (गघ ॥ विधान (थं धून कं जाय रु
पुपुं तु र्य ॥ वाकन काय ॥ दवा गा र्वा द ॥ आत्मा गा र्वा द ॥ गाल ध
नादि आशु स वि य ॥ या घन मा सू य रु ति न वि य ॥ समय वि य य घन
थिय म ग नी ॥ धन लि आखा न वं का व दि ग पू ज नी ॥ च द ना दि ह्र ह्र म रु ॥

लैख म धु ल पट वा स न म धु ल या का व ॥ गाल ॥ खि ॥ व व लि न ॥ स्र ह
म रु धा पू ज नी ॥ मू लि पू ज न ॥ स्र ह्नि क या या व ॥ लैख म धु ल (थ ला व या
घन मा र्ग ॥ गाल आदि न ला हा ग स च ग न स्र ह्नि क या या व का य ॥ मू लि
पू ज न म रु धा ॥ य ला स ला च क गाल न न्या च कं ८० या विधि ॥ ॥ अ
थ वि व रु न वि य ॥ न क स ना ट श्व न पू ज नी वि धि (थ ॥ दध (थं धून कं ॥
आखा न व या व ॥ गाल आदि न पू र्ज नी का य ॥ पू र्व व रु क म न स्र ह्नि क व ॥

विद्वरुहविधि॥ समयययनविधि॥ ध्वगविद्वरुहनिविधि॥ दि
मयूजनं नयथसर्गका॥ ॥ अथपाणवायविधि॥ नकसनाठ
ध्वनयूजनं॥ विधि॥ नाठध्वनसजवसगभक्तं नयावयूजनं च न
नादि॥ मरु॥ डं दूकं कालमूर्त्यनिनकुनयदायनम॥ ॐ दवलि॥
जापली॥ नाथयूजनं॥ यष्टुगर्प॥ वाकनकाय॥ सुष्ठु॥ दिधवाग
वदि॥ गालधवादिधनसिंदूर॥ सुष्ठु॥ स्नानवीय॥ यावनभासूय

रंतिन॥ समयविधनकेमर्गनी॥ आखात्रवयाव॥ दिनयूजन॥
गाल॥ धि॥ ववलि॥ धंम॥ गक्तयूजनं॥ मूलियूजन॥ गालआदिन
ज्ञाय॥ मूलियूजनमकु॥ गक्तकात्रयूजनं मरु॥ डं दूकं कालात्म
ननिनकुनयष्टुधवात्मनम॥ जवगक्तकात्र॥ गक्तकात्रयाईवनस
क्तिकायावयावनभासनि॥ नाठध्वनसगभक्त॥ यावनभानथवर
जियागसाहावक॥ गक्तनयिग॥ कंथनयत्रसयालकं यावनद्रय

क॥ समयचयनधियक॥ धर्मशुद्धं काललयविधि॥ ॥ अथ द्वाद्य
वसिद्धिविधि॥ नकसनाटध्वनपूजनं॥ गाल, धि, ववलि, गधंरु, द्या
धनखंठियायावर्गनाटध्वनसुखवसुधायय॥ जलक्षानद्वयम
कस्तानं॥ चदन, सिंदूर, जङ्गापवीगपूष्य, नपूजनं, चद्रमंरु, नेवव
लिग॥ धियाद्ववनसूयआदिनद्याद्यनवायखछिनयायावर्ग॥ सा
गर्धर्भनृथध्वनदवाचनं॥ गालआदिनस्त्रयमस्तुपूजनं॥ ॐ दैव

[illegible]

कृष्णकवचम् ॥ अमुमकुल ॥ कथा लखवाननिर्मकनया कवच
लिम्ब ॥ मूलवृत्त ॥ अहो न्यासनसाधनये ॥ नाटध्वनसमूलमकुल
पत्रपंखानन कवकसूत्र आदिन ॥ गालधनादिमूलैरिपूजनं ॥ ॐ
देवलि ॥ गालउद्य आदिनया लालागसुचननस्वकि कथा आव
॥ गाल, वि, वदलि, यंग, ग, क, य, क, म, र, स, ह, ज्ञा, य, स्व, स्व, म, कु, ल ॥
सूत्र आदिनया यत्र ज्ञायमूलमकुल ॥ पुत्रदक्षि विद्यावद्यायत्र

काय ॥ खड्गिपुत्रयार्त ॥ द्यायत्रलचनक ॥ गालउद्य आदिनचक
नादि आकृसविय ॥ द्यायनमासूत्रादि विय ॥ समय विय ॥ ययनधि
यमनेव ॥ आखानवकाव ॥ दिगपूजनं ॥ यवगवाचक द्यायनकूयक
॥ समयययन धियक ॥ द्यायवटाय ॥ ॐ निद्यायत्रसिद्धियाविधि ॥
॥ ॥ अथकनूकायविधि ॥ कनूकावियकूडय आदिनस्नानादिउ
पत्रासयाचकनेव लालवकाव ॥ नाटध्वनयूजा ॥ स्नान, यक्षी, मृग, अ

लिखान॥ धनिवगजीनकमलवाय॥ लीपनी डाहायनी यशुवले
वासनीदवसकेथने गरुयाकमाल॥ चकन सिद्धि दहि जङ्गायवी
गय्य॥ सर्वोपहावगयुजन॥ गालादिनकलहाचकंदवनवा
य॥ स्नानादियुजनः॥ कनूधकायपनीसी॥ डंअडादि॥ यजमानस्य
अमूकनृएकनृधसिद्धिकामनार्थं नृएध्वजहृदयकायप॥ अयह
नयुजा॥ ययहाजनः॥ अचार्यधियुजन॥ गुननमस्कारं॥ न्यासजल

पाशार्धपाणयुजनी॥ आत्मयुजा॥ मालनीय० नृ॥ यशुवलि॥ त्रिव
लि॥ नवात्मार्क॥ नृएध्वजहृदयार्चनः॥ ध्यान॥ यममकुणाययाकुलि॥
डंहुंकंकनृधमहारेववायकुनगकि सहिगायअवगव२ स्वाहा॥ ३॥
वृंदवलि॥ डंहुंकंकनृधमहानृएध्वनायमू॥ धीनृएलक्ष्मीगकि स
हिगयनम॥ मू॥ लनयाकुलि॥ ३॥ नवनाटकादिसर्वध
वार्चनः॥ शिपुनसूदनीदवार्चनं॥ वलिवियमालका॥ चूरुगुनक

वृक्षदयकेशवकवृक्षसहकवियिवर्गशयाकुलियाचक॥ वृद्धं
वलि॥ कवृक्षवियर्गयममकुनशयाकुलियाचक वृद्धं वलि॥ ता
ल॥ वि॥ जवखवदध॥ मूज॥ ववलि॥ धर्म॥ ग॥ क॥ स्वस्वमकुलपूज
न॥ अनवलि॥ आवाहनादिवलिनव मूर्धादर्शनः॥ तनामूलि
पूजनं॥ स्वस्वमकुल॥ वलि॥ मूलवृत्त॥ अक्षपूजनः॥ आवाहनादि
वलिनैवद्य॥ संप्रदायपूजनविधिसमयवलिआदिनविय॥ यम

मकुनजाययध॥ कि॥ जयपूया॥ क॥ ग॥ देवस्वकायावलिचर्कगलि
यागयागी॥ मूलनजायधूपदीपयति॥ क॥ सा॥ ग॥ वायपूजनं॥ यष्टु
साधनं॥ यष्टुगर्घ्यं॥ पूनसा॥ ग॥ सा॥ ह॥ मा॥ या॥ धी॥ सं॥ व॥ क॥ क॥ मा॥ मु॥ ति॥
अ॥ ग॥ म॥ धा॥ दि॥ य॥ वि॥ वा॥ न॥ पू॥ ज॥ न॥ या॥ च॥ क॥ त्या॥ दि॥ वा॥ क॥ न॥ द॥ य॥ स॥ गु॥ ल॥ दि॥
य॥ व॥ र्क॥ ए॥ क॥ न॥ क॥ द॥ वा॥ गी॥ र्वा॥ द॥ ग॥ ल॥ ध॥ ना॥ दि॥ अ॥ रि॥ ष॥ का॥ दि॥ व॥ द॥ न॥ सि॥
दू॥ न॥ स॥ गु॥ ल॥ स्त्रा॥ न॥ आ॥ त्मा॥ गी॥ र्वा॥ द॥ क॥ वृ॥ क्ष॥ वि॥ य॥ र्ग॥ क॥ व॥ ज॥ य॥ स॥ का॥ या॥

स्नानञ्जकमवियञ्चकमननिक्कनकंरु ॥ आचार्यनदवरुय्यवि॥
गालधनादिसमयवियसकलं ॥ घञ्चचकंरुनकमननि ॥ गाल ॥
दिनलाहागसस्त्रिकचैतनचायवकायमूलीपूजनमकुवास्त्रम
कुवा ॥ यञ्चमूञ्चसमय्यवि॥ आस्त्राव ॥ आसवालिविसर्जनं ॥ अञ्चलं
सकगकनानमकुञ्च ॥ कगकमथिस्त्रय ॥ लंसकव२गुञ्चलूकंथठरु
॥ मालनीपञ्चपावय ॥ कसरिठधयसर्व(थलाव ॥ लखमकुञ्च(थले

पटवासमकुञ्चलकपाचगंधविवास्नानधनिमगंधूपदहते ॥
लखमकुञ्चल(थलावकनूवविद्यकंस्त्रने ॥ रुकविद्यवर्कलखमकुञ्चल
स्त्रने ॥ रुकविद्यव्यागच्छरुलवमकुनस्नानजापयाठच्छचके ॥ कनू
वविद्यकंयायममकुनजापयाठावनाठध्वनकंरुयाजापस्नान
वा(थजापयाठास्नानवानच्छचके ॥ रुकविद्यके ॥ कनूवनागकायके ॥
महालके ॥ कनूवजनदावसमयचपनथियके ॥ अञ्चलकनूवकायवि

॥ १॥ ॥ अथ आख्यानसंपूजाविधि ॥ सिद्धिद्वगकाङ्क्षी ॥ आख्यान
दागेनयादाव ॥ कथयावलियागच्छिविय ॥ नृत्यध्वनमूलनक्षत्रार्च
नी ॥ जायस्फोर ॥ पासाकवाकनकाय ॥ आक्षुसविय ॥ कायसचाठ
खानऊऊमकावलिसगसीहने ॥ अमुनविसऊनयादाव ॥ नाटध्वन
सगयककाय ॥ लियोगसचावाचकआख्यानययक ॥ धनआख्यान
संपूजाविधि ॥ ॥ सिद्धिद्वगकाङ्क्षी ॥ कनयादावमानधुचिवमुडय

वासयाचक ॥ क्लिप्तस्वानिधूनक ॥ यत्रशत्रवाव ॥ नाटध्वनसप
॥ अयस्त्रपूजासैयाय ॥ नृत्यध्वनदवाचनी ॥ जायस्फोर ॥ आक्षुसविय
॥ मर्गकायक ॥ वाचालिहानकावमाउकयसकलेवधनलिदव
मर्गव ॥ नाटध्वनपूजायाय ॥ स्नानपञ्चमृगमनुस्नानचगसिधुद
धिधनिदगजिकवलवाय ॥ ऊऊमस्नानचगवासनवायनेवअ
वलिऊजावनसेसाचदुर्मर्ग ॥ धनवासनचायावगालऊव

सः विरववसः ववलिजवसः गमकजवः धर्मगलिवन यश्चमृतादि
 स्नानः वेगः सिधः ऊरुमः स्नानः चकर्मटः वलियूजायाय ॥ गालयति
 वसविनं ॥ गालयति सईधनं ॥ उजययसः प्रायमनु ॥ (गमनाचन ना
 नं कौसो विपुनसूदयनमः ॥ ॐ काः सकाउरास्नानः आकनः उजय
 नवानायेधनं ॥ ॥ ॐ नमः ॥ धानाः धनं ॥ ॐ अथादि ॥ यज
 मानस्य अमकनृत्त नृत्त सिद्धि धानृत्त एव नृत्त वकाययः ॥ अथ हानय

ॐ ॐ ॐ

जानिमित्यर्थः ॥ पूजा राजनी ॥ ॐ अथ धुमधुलाकावलादि ॥ पुनः स
 मन्तर् ॥ न्यासाः नैजं ॐ कूं कूं अमाय रुट् ॥ कनसाधनी ॥ नैजं ॐ कूं
 कां हृदयाय नमः ॥ नैजं कूं की निवसे स्वाहा ॥ नैजं ॐ कूं कूं निवायव
 घट् ॥ नैजं ॐ कूं कूं कवचाय कूं ॥ नैजं ॐ कूं कूं नरुययाय वघट् ॥
 नैजं ॐ कूं कूं अमाय रुट् ॥ कनार्त्त न्यासः ॥ मूलवत् (दीर्घ अर्थ या
 य पूजा ॥ आवाहनादि (धनू मूर्ती दधयि ॥ नैजं कूं अ (धन ॥ नैजं की

लि(र्ग)॥ जंऊं कूं नाहि ॥ वेकूं द्वादि ॥ जंऊं कूं (७) ॥ जंऊं कूं ४ ललाट ॥
 ॐ ह्यननरुतगुडि ॥ उं कूं हं महानृथध्ववायमरुहं ववायमा
 स्मननमः ॥ आत्मपूजा ॥ चक्रनादिहृद्यर्न ॥ मालनीय (०) ग ॥ स्वस्वमनु
 तपश्चवलियुजर्न ॥ साधर्नताम्बुलादि ॥ ॥ गतादवाच्चर्न ॥ जंऊं उं
 कूं कों कों कूं कूं पालायवलिगृह २ खाहा ॥ जंऊं कूं वाँ वद् कायवलि
 गृह २ खाहा ॥ जंऊं उं कूं गंगायनयवलिगृह २ खाहा ॥ जंऊं उं कूं या

आग्निनीत्यावर्लिष्ट २ स्त्राहा ॥ ॐ हूं सर्वविधि ॥ ॐ ॐ ॐ हूं नन्दिन
 म ४ ॥ दक ॥ ॐ ॐ ॐ हूं मलकालायनम ४ ॥ वाम ॥ ॐ ॐ ॐ हूं गणपत
 यनम ४ ॥ दक ॥ ॐ ॐ ॐ हूं वद्रकायनम ४ ॥ वाम ॥ ॐ ॐ ॐ हूं आध्याना
 कयनम ४ ॥ ॐ ॐ ॐ हूं अनन्तासनायनम ४ ॥ ॐ ॐ ॐ हूं स्कन्दायनम ४ ॥
 ॐ ॐ ॐ हूं नालायनम ४ ॥ ॐ ॐ ॐ हूं पद्मायनम ४ ॥ ॐ ॐ ॐ हूं पञ्चाय
 नम ४ ॥ ॐ ॐ ॐ हूं कर्णनायनम ४ ॥ ॐ ॐ ॐ हूं कर्णिकायनम ४ ॥ ॐ ॐ

[illegible]

उत्तरी हिमशाय नमः॥

2559 I

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥
अथ श्रीराधाचरितम्
रघुन॥ ॥ पूर्वद्वारस
मीपंगान्ता॥ गायत्रीमं
त्रादिनिरीक्षणां॥ ॥ पृ
थक्ते॥ ॥ उन्मेषिनि
मंत्रेणा
राः॥ प्रपू
जाते
गादि
रेतलयेः लभ्य
धारा॥ ०॥ रेत्तमने
हो। मोहिनि अविकर
गा॥ ॥ देवस्थले
मुक्षया॥ ॥ ततो ह्य
रघुना॥ ॥ उन्मेषे मेन
मः॥ ३॥ उन्मेषे मेन

उत मुं जने वि यो वि
प्रा वि प्र स्य व द नो वि
प रि श्र नः ॥ वि शो आ द
वे व मु ना वि ट क
र न्य दी ट व स स वि
तुः प रि ष्ट निः स्वा ह
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ वि ज
मे ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ इ
दि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ इ
नि ट ह ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ क
ल र प ज ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वि उ र क त्रा य न ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
पा य नो वा न नै व
हि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वा स न न यो ह ॥ ॥ ॥ ॥

जिमावक्ष्यान्नमः॥ ॥
 ॐ कति कट कुने सः
 ववुवागदय मिवाव
 मरिनेवचाव॥ सुमं
 सव्यशकुने भवा सि
 मात्या काचिदभिभ
 विव्याविदने॥ मा
 त्यादेव नरुदधी
 सुपयोमाव्याविद
 दिउमावीने असा
 ॥ धितुमनुप्रदिशेव
 वि कटलुनंगलो
 मरुवादेवदेव॥
 अवकटलदिशो
 गलगासुमंगलो
 मरुवादीशः
 ॥ मा नरुनरुस
 नमास सः ॥ सः

ददुदमविदये सुव
 गः॥ नृनो गोजनमः
 ॥ नृनो मविदुवने
 ॥ वस्य। नृनो मादुद
 गजुसुमनिविदुव
 स्यन॥ यम य क
 अदुदुवपीजा ॥ म
 सुवागस्य नरासः
 आमा॥ य नृनो
 यो नमः॥ ॥ नृनो
 देनममा नो नमः
 गदुदुदुदुदुदुदुदुदु
 गानो नरुनमरुनो
 मिनो नमो नरु
 गदुदुदुदुदुदुदुदु
 वमिव नि नमः

वनिरायस्याथ वनि
पयसि॥ निवसह
रक्षत्रहंसा ३६०
हस्तजोहंसा ॥ सुभ
गलदासचननः॥
वत्सोहि ६०॥ ॥ ॥
निजोरागा यमनः॥
॥ ॥ ॥ ॥

























